❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
# आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।
अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 43, अंक 10 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 दिसम्बर, 2019 से रविवार 5 जनवरी, 2020
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

### दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सफल प्रयास : भारत के कोने-कोने में आयोजित

## पुस्तक मेलों एवं विश्व पुस्तक मेलों में वैदिक साहित्य का प्रचार

### नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान : 4 जनवरी से 12 जनवरी, 2020

## आइए ! "सत्यार्थ प्रकाश" के प्रचार-प्रसार में हम भी दें अपना योगदान

**स्टाल उद्घाटन**
**4 जनवरी, 2020**
**प्रातः 11:30 बजे**

**आपके सहयोग की आहुति कर सकती है किसी का जीवन परिवर्तन**

**हिन्दी : हॉल नं. 12**
**स्टाल : 151-160**

**बाल साहित्य**
**हॉल : 7H स्टाल : 62-63**

**मेला समापन**
**12 जनवरी, 2020**
**रात्रि 8 बजे**

वैदिक धर्म, संस्कृति, संस्कारों, सिद्धांतों और मान्यताओं को संपूर्ण विश्व में फैलाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव प्रयासरत है। इसके लिए सभा ने सन् 2004 से लेकर 2020 तक भारत में आयोजित 72 पुस्तक मेलों तथा विश्व पुस्तक मेलों में आर्ष साहित्य के स्टॉल लगााकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। दिल्ली सभा ने भारत की राजधानी दिल्ली सहित चंडीगढ़, जम्मू, श्रीनगर, लखनऊ, त्रिवेन्द्रम, अहमदाबाद, शिलांग, गुवाहाटी, पटना, कुल्लू, शिमला, नागपुर, इंदौर, भुवनेश्वर, मुम्बई, चेन्नई, कुरुक्षेत्र आदि शहरों में भी जाकर पूरी शक्ति से

वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार किया, जिसके परिणाम स्वरूप वैदिक साहित्य की एक लहर-सी चलने लगी और सत्यार्थ प्रकाश, वेद-उपनिषद् और अन्य अनेक वैदिक विद्वानों के ग्रंथ जिनमें प्रभुत्व चिन्तकों के साहित्य को पढ़कर लाखों लोग लाभान्वित हुए हैं। अब हर पुस्तक मेलें में आर्य समाज के स्टॉल की प्रमुखता से मांग होने लगी है।

महर्षि दयानंद जी की वैदिक शिक्षाओं और आर्य समाज के प्रचार- प्रसार का यह कार्य हुित ही कारगर सिद्ध हो रहा है। जो लोग आर्य समाज की पवित्र विचारधारा से अब तक अनभिज्ञ थे वे भी महर्षि के दीवाने हो रहे हैं। इस महान् सेवा प्रकल्प के संचालन में सभा प्रतिवर्ष 4-5 लाख रू. से अधिक अतिरिक्त खर्च करती है। इसके पीछे भावना यही है कि वैदिक विचारधारा और सिद्धांतों से संसार का हर व्यक्ति परिचित हो जाए और लाभ उठाए।

## 50 हजार नए व्यक्तियों तक 10/- रु. में सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने में अपना योगदान दें

**महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/- रुपये का है, सभा को 30/- रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/- सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अतः आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/- में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें।**

**सत्यार्थ प्रकाश छूट हेतु दी गई दानराशि 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। दानदाताओं महानुभावों के नाम आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किए जाएंगे**

आप अपना सहयोग 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर में नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर के माध्यम से भेज सकते हैं। आप अपना दानराशि सीधे तौर पर निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं -
**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा A/c No. 1098101000777 केनरा बैंक संसद मार्ग IFSC Code : CNRB0001098 MICR No. :110015025**
कृपया अपनी दान राशि जमा कराते ही कृपया श्री मनोज नेगी जी (9540040388) को सूचित अवश्य करें तथा अपनी जमा स्लिप भी इसी नं. पर व्हाट्सएप्प करें ताकि आपको राशि की रसीद भेजी जा सके और आर्यसन्देश में नाम भी प्रकाशित किया जा सके।

**विश्व पुस्तक मेले में समय दान करने वाले सहयोगी कार्यकर्त्ता अपने नाम श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175) को नोट कराएं।**

### दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत् आर्य विद्या परिषद दिल्ली की वार्षिक बैठक सम्पन्न

## इंदिरा गांधी स्टेडियम में आयोजित एम.डी.एच. स्वर्णिम शताब्दी समारोह में होगी आर्य विद्यालयों की भव्य प्रस्तुति

**एम.डी.एच. आपकी ही संस्था : समारोह में पहुंचकर दें आशीर्वाद - महाशय धर्मपाल** | **सभी विद्यालयों दी पहुंचने की स्वीकृति**

**23 जनवरी को होगी नैतिक शिक्षा की परीक्षा : आर्य विद्या परिषद् दिल्ली का सामूहिक वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा 25 जुलाई को**

### दिल्ली के सब आर्य विद्यालयों में सुनिश्चित किया जाएगा शिक्षा से संस्कार कार्यक्रम का क्रियान्वयन

विस्तृत समाचार पृष्ठ 6 पर

**वेद-स्वाध्याय**

# आत्मविशुद्धि द्वारा सर्वविधैश्वर्य प्राप्ति

इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे।
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषाससि।। -ऋ० 8/95/9
ऋषि: **तिरश्ची**।। देवता - **इन्द्र:**।। छन्द: **अनुष्टुप्**।।

**शब्दार्थ - इन्द्र** = हे आत्मन्! **शुद्धः हि** = शुद्ध हुए-हुए ही तुम **नः** = हमें **रयिम्** = ऐश्वर्य देते हो, **शुद्ध** = हुए-हुए तुम **दाशुषे** = दानशील के लिए **रत्नानि** = रत्नों को, रमणीय धनों को देते हो। **शुद्धः** = शुद्ध हुए-हुए तुम **वृत्राणि** = वृत्रों को, पापों को, बाधाओं को **जिघ्नसे** = हनन करते हो और **शुद्धः** = शुद्ध हुए-हुए तुम **वाजम्** = ज्ञान-बल को **सिषाससि** = देना चाहते हो, देते हो।

**विनय** - हे आत्मन्! तुम परमैश्वर्य वाले हो। हे इन्द्र! तुम हमें सब प्रकार का ऐश्वर्य दे सकते हो। हम यूँ ही बाहर भटकते हैं, बाहर की वस्तुओं का आसरा देखते हैं, जबकि सब अनिष्टों को हटा सकने वाले और सब अभीष्टों के दे सकने वाले, हे मेरे आत्मन्! तुम हमारे अन्दर विद्यमान हो, फिर भी, हममें तुम्हारी जो यह शक्ति अभी प्रकट नहीं होती है इसका कारण यह है कि हमने अपने अन्दर तुम्हें शुद्ध नहीं किया है, हमने आत्म-विशुद्धि प्राप्त नहीं की है। जिनका आत्मा शुद्ध हो जाता है, जो तपश्चर्या द्वारा व निष्काम धर्म की साधना द्वारा या पवित्र सामोपासना द्वारा अपने राग-द्वेष की मलिनताओं को, नानाविध विषय-वासनाओं की अशुद्धि को और अज्ञान-मल को हटाकर आत्मा को विशुद्ध कर लेते हैं, वे आत्माराम हो जाते हैं। वे अपनी विशुद्धात्मा को पाकर फिर अन्य किसी भी बाह्य वस्तु की अपेक्षा नहीं रखते। तब वे अपनी विशुद्ध आत्मा से जो कुछ माँगते हैं वह सब-कुछ उन्हें मिल जाता है, मिलता रहता है। नि:सन्देह हे आत्मन्! तुम शुद्ध हुए हमें सर्वविध ऐश्वर्य दिया करते हो। संसार में जो दानशील, स्वार्थ-त्यागी, उदार पुरुषों को सब रमणीय धन मिल रहे हैं, जो अस्तेयव्रतियों को 'सर्वरत्नोपस्थान' हो रहा है यह सब, हे विशुद्ध आत्मन्! तुम्हारा ही दान है, तुम्हारी ही विशुद्धता का प्रताप है। विशुद्ध हुए तुम तो सब विघ्न-बाधाओं को भी मार भगाते हो, सब पापों का नाश कर देते हो, सब वृत्रों का हनन कर देते हो, सब रुकावटों को दूर कर देते हो और अन्त में, हे शुद्ध इन्द्र! तुम हमें सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य को, 'वाज' को भी देते हो। इसलिए भाइयो! आओ, अब जब कभी हम अनैश्वर्य से पीड़ित हों या रमणीय धनों को प्राप्त करना चाहें तो हम अपनी आत्मा को शुद्ध करने में लग जाएँ; जब कभी वृत्र के प्रहारों से आक्रान्त हों तो इस आत्मविशुद्धि के हथियार को पकड़ लेवें और जब कभी सर्वोच्च ज्ञानबल की आवश्यकता अनुभव करें तो भी आत्मशुद्धि की ही शरण में जाएँ, आत्मशुद्धि का ही आश्रय ग्रहण करें।

**-: साभार :-**
**वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

**सम्पादकीय**

## पुस्तक मेलों में वैदिक साहित्य की भूमिका और सार्थकता

विश्व पुस्तक मेलों को ज्ञान का कुंभ और पुस्तकों को ज्ञान की गंगा की संज्ञा दी जाती है। दिल्ली में साल दर साल इस ज्ञानकुंभ का आयोजन करने का उद्देश्य देश के युवाओं को ज्ञान-विज्ञान, दर्शन एवं साहित्य से अवगत कराने के साथ ही आधुनिक, तर्कशील और विवेकवान नागरिक बनाना है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में विश्व पुस्तक मेला दर्शन और साहित्य के बजाय धर्मान्तरण का अड्डा बनता नजर आ रहा है। प्रकाशन के नाम हिंदी-देवनागरी भाषा में मिलेंगे और उनके अंदर पुस्तकें देखें तो इस्लाम एक परिचय, नबियों के किस्से, आओ नमाज सीखें, इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर, मन्सब पैगम्बरी जैसी ढेरों किताबें देखने को मिलेंगी।

अनेकों ईसाई संगठन अपने मत मतांतर से सम्बन्धित पुस्तकें लेकर लोगों को जीसस के चमत्कार बताते मिलेंगे। हालाँकि इनके ज्यादा साहित्य बच्चों के स्टाल में मिलता है, इनका उद्देश्य यही होता है कि बाल मन पर ही कब्जा किया जाये। गौतम बुक के स्टॉल पर बौद्ध धर्म के ग्रंथों के साथ नवबौद्ध बैठे मिलेंगे। इसके अलावा विश्व पुस्तक मेला अंधविश्वास, पोंगापंथ पाखंड बढ़ाने वाले साहित्य से अटा पड़ा मिलता है। विश्लेषणात्मक सोच के अनुसार भारतीय इतिहास में हमारे वैदिक साहित्य एवं महापुरुषों के विचारों के प्रति सम्मान की भावना की सीख देने वाले प्रकाशक पुस्तक मेले में आर्य समाज के अलावा दिखाई नहीं देते।

जहाँ विधर्मी समुदाय हमारे ग्रंथों पर हमला भी कर रहे हैं। नकली मनु स्मृति से लेकर अनेकों ग्रन्थ गलत तरीकों से छापकर बेचे जा रहे है। आप पुस्तक मेले में आकर स्वयं देख सकते हैं कि इस्लाम के मानने वालों से लेकर ईसाई व कई अन्य पंथ अपनी पुस्तकें निशुल्क वितरित करते मिल जायेंगे। वहां युवक-युवतियों को निशाना बनाया जा रहा होता है, उनके अन्दर हमारे ही ग्रंथों के प्रति नकारात्मक भावों को पिरोने की कोशिश की जा रही होती है। हालाँकि हिन्दू धर्म से जुड़ें अनेकों बाबाओं के स्टाल आपको पुस्तक मेले में देखने को मिलेंगे, किन्तु जब आप देखेंगे कि उन सभी स्टालों पर बाबाओं के कथित चमत्कारों से जुडी पुस्तकें या फिर हमारे ही मिलावटी ग्रन्थ वहां बेचें जा रहे हैं। कोई आसाराम को निर्दोष बताता मिलेगा, तो कोई राधे माँ का गुणगान करता दिख जायेगा। ओशो का अश्लील साहित्य बिकता मिलेगा। किन्तु हिंदी साहित्य हाल में केवल और केवल आर्यसमाज ही राष्ट्रवादी, समाज सुधारक, नवचेतना, सदाचारी, पाखंडों से मुक्ति दिलाने वाला, विधर्मियों के जाल से बचाने वाला साहित्य वितरित करता दिखेगा।

आर्य समाज का इस मेले में जाने और पुस्तकें वितरित करने या प्रचार करने का उद्देश्य यही रहता है कि इस पुस्तक मेले के माध्यम से युवाओं को वह साहित्य उपलब्ध हो जिसकी आज उन्हें और इस राष्ट्र को आवश्कता है। क्योंकि समाज के अतीत, वर्तमान और भविष्य के मार्गदर्शन में पुस्तकों की सबसे प्रभावशाली भूमिका रही है। मसलन अतीत से लेकर अभी तक ज्ञान की अनवरत बहती धारा का नाम पुस्तक है और इसका संगम वर्तमान काल में पुस्तक मेले हैं। आप सभी को ज्ञात होगा मध्यकाल से लेकर आर्य समाज की स्थापना तक ज्ञान की अविरल धारा को कुछ लालची और विधर्मी लोगों द्वारा अज्ञानता का कचरा डालकर मैला करने का कार्य वृहद रूप से हुआ, हमारे अनेकों ऐतिहासिक ग्रन्थों में मिलावट की गयी, सृष्टि के आदि ग्रन्थ मनुस्मृति को अशुद्ध किया गया और तो और हमारे धार्मिक ग्रन्थ रामायण, गीता और महाभारत में भी हमारे महापुरुषों के जीवन चरित्र से लेकर कथानकों को अशुद्ध किया गया।

फलस्वरूप समाज अपने विशुद्ध वैदिक ज्ञान से दूर हुआ, अज्ञानता को ही सत्य स्वीकार हमने वर्षों की गुलामी की बेड़ियों को अपना हार समझ लिया। इसके पश्चात स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सर्वप्रथम अपने ग्रंथों की शुद्धि कर मिलावट और अज्ञानता को दूर करने का कार्य किया। हमें अपनी वैदिक संस्कृति और धर्म से परिचित कराया और नया विशुद्ध साहित्य रचकर हमें एक अस्त्र के रूप में दिया। तो आज हमारा यह फर्ज बनता है कि हम स्वामी द्वारा सहेजा गया वैदिक ज्ञान पुस्तकों के माध्यम से यह अस्त्र लोगों तक पहुंचाएं।

आर्य समाज पुस्तक मेलों और विश्व पुस्तक मेलों के माध्यम से समय-समय पर अज्ञानता के रण में ज्ञान के इन अस्त्रों का प्रयोग कर समाज में चेतना जगाने का कार्य कर रहा है। इसी क्रम में वर्षों पहले जब ये एहसास किया गया कि देश भर में लगने वाले पुस्तक मेलों में विधर्मी लोग अभी भी अपनी स्वरचित पुस्तकों के माध्यम से हमारे धर्म और संस्कृति पर हमला कर रहे हैं। तब यह फैसला लिया गया कि क्यों न हम भी अपने इस ज्ञान के अस्त्रों का प्रयोग पुस्तक मेले के माध्यमों से करें!

तत्पश्चात देश भर लगने वाले पुस्तक मेलों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्ष ग्रंथों, विशुद्ध मनुस्मृति से लेकर रामायण और महाभारत सहित वैदिक साहित्य को लेकर भाग लेना शुरू किया। जैसा कि आप सभी भलीभांति परिचित होंगे, देश की राजधानी दिल्ली में तो प्रतिवर्ष सत्यार्थ प्रकाश 10 रुपये में उपलब्ध कराया ही जा रहा है। साथ ही एक स्टाल शंका समाधान का भी रखा जाता है, जिसमें वैदिक विद्वान मेले में पधारे लोगों को धर्म, आत्मा,जन्म, पूर्वजन्म से लेकर ईश्वर के निराकार होने और वेदों में गोमांस भक्षण निषेध जैसे सभी विषयों पर शंकाओं का समाधान भी करते हैं।

*- जारी पृष्ठ 7 पर*

## पुस्तकों के प्रचार से क्या होता है?

*.....हालाँकि हिन्दू धर्म से जुड़ें अनेकों बाबाओं के स्टाल आपको पुस्तक मेले में देखने को मिलेंगे, किन्तु जब आप देखेंगे कि उन सभी स्टालों पर बाबाओं के कथित चमत्कारों से जुडी पुस्तकें या फिर हमारे ही मिलावटी ग्रन्थ वहां बेचें जा रहे है। कोई आसाराम को निर्दोष बताता मिलेगा तो कोई राधे माँ का गुणगान करता दिख जायेगा। ओशो का अश्लील साहित्य बिकता मिलेगा। किन्तु हिंदी साहित्य हाल में केवल और केवल आर्यसमाज ही राष्ट्रवादी, समाज सुधारक, नवचेतना, सदाचारी, पाखंडों से मुक्ति दिलाने वाला, विधर्मियों के जाल से बचाने वाला साहित्य वितरित करता दिखेगा।....*

झारखण्ड में धर्मान्तरण की चिन्ता और चिन्तन पर आधारित लेख

# सरकार बदलने से कहीं धर्म भी न बदल जाए?

झारखण्ड में सरकार बदले एक हफ्ता भी नहीं हुआ है पर लोगों के सुर बदलने शुरु हो गये, रांची धर्मप्रांत के आर्च बिशप फेलिक्स टोप्पो ने बिशप हाउस में पत्रकारों से बात करते हुए कहा है कि "पिछली सरकार में हम लोग तनाव में रहते थे। उम्मीद है कि नई सरकार में हमें ज्यादा समर्थन मिलेगा, पिछली सरकार में मिशन के कामों की गति धीमी पड़ गई थी, सरकार की ओर से ज्यादा बाधा आ रही थी, नई सरकार मिशन के कामों को समर्थन देगी।" बिशप के इस बयान से यही अंदाज लगाया जा सकता है कि रघुबर दास सरकार में मिशनरियों पर शिकंजा कसा हुआ था।

असल में देखा जाये तो झारखण्ड में ईसाई मिशनरीज धर्मान्तरण का कार्य जिस स्पीड से कर रही थी पिछले पांच साल में उनकी इस गति पर ब्रेक लगा है, परन्तु इसमें सरकार के साथ प्रकृति पूजक सरना समुदाय का भी काफी योगदान रहा है। पिछले वर्ष झारखंड की राजधानी रांची से करीब 25 किलोमीटर दूर आदिवासी बहुल गढ़खटंगा गांव में उभरे विवाद से अनुमान लगाया जा सकता है जब इस गांव के लोगों ने आदिवासियों की जमीन पर बने चर्च को तोड़कर सरना भवन बना दिया है। साथ ही चर्च के ऊपर लगे क्रॉस को तोड़कर सरना झंडा लगा दिया था। आदिवासियों द्वारा चर्च के खिलाफ इस कार्रवाई ने एक नई बहस छेड़ जन्म दे दिया था क्योंकि पिछले कुछ सालों में झारखंड में ईसाइयों के धर्म प्रचारकों तथा चर्च की गतिविधियों को इनके खिलाफ जगह-जगह बैठक और धरनों का सिलसिला भी तेज हुआ है। सड़कों पर जुलूस भी निकाले जाते रहे हैं।

***....रोटी-बेटी की अलगाववादी विचारधारा ने सरना समाज को सबसे अधिक बाँट दिया है और उनमें ईसाईयों को अलग समझने की भावना भी बढ़ रही है। दोनों के मनोभावों को समझने के लिए सुक्ष्मदर्शी होने की जरूरत है। इसके बिना इसके मनोविज्ञान की गाँठ को समझना मुश्किल है। क्योंकि यह लड़ाई हमारी सभ्यता और संस्कृति को बचाने की है। आज सरकार बदलने से जो वहां मिशनरीज खुश हैं उसका एक कारण यह है कि 2017 में भाजपा सरकार ने झारखंड में धर्म स्वतंत्र कानून बनाया था जिसका विपक्ष ने पुरजोर विरोध किया था। .......***

अगर इस बहस पर चर्चा करें तो सबसे पहले यह जानना जरुरी है कि आखिर सरना समुदाय कौन है? क्या पूरा समुदाय ईसाई धर्मातरण के खिलाफ है या इसका कुछ भाग ही इसका विरोध कर रहा है या यह एक सतही राजनीति मामला है? आखिर क्या है इसका मनोविज्ञानिक कारण और कारक? असल में आज से डेढ सौ वर्ष पहले आदिवासी समाज एक ही रूढ़ि व्यवस्था या परंपरा से संचालित था। 1845-48 में सबसे पहले जर्मन मिशनरी बिहार आए उस समय झारखण्ड राज्य का जन्म नहीं हुआ था। तब उन्होंने बाईबिल स्कूल चलाए, फिर 1868 में कैथोलिक मिशन आया और उसने भी बाईबिल स्कूल चलाये और आदिवासियों में ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार किया। ईसाई धर्म के साथ बंडल में आए स्कूल और अस्पताल ने आदिवासियों को नई जिंदगी से परिचित कराया और पश्चिमी सभ्यता के प्रगतिशील संस्ति आदिवासी क्षेत्रों में आई। शुरूआत में आदिवासियों को मिशनरियों पर बहुत विश्वास नहीं था। लेकिन धीरे-धीरे ईसाई धर्म में दीक्षित होते गए।

अब मिशनरियों ने धर्मांतरित ईसाईयों का एक अलग समाज बनाने का फैसला किया और उस समाज को फैलाने के लिए भी अनेक उपायों का सहारा लिया। यानि किसी समाज को लेकर अगर भविष्य में सत्ता पाना है तो उस समाज के सदस्यों की संख्या में वृद्धि आवश्यक होती है। ईसाई धर्मान्तरण के खेल को इसकी पृष्ठभूमि में भी समझने की कोशिश की जा सकती है। इससे पहले पूरे भारत में ईसाईयों का कोई स्वतंत्र समाज वजूद में नहीं है। ईसाईयों का हित मतलब चर्च का हित होता है। ईसाईयों पर हमला भी आम ईसाईयों पर नहीं बल्कि चर्च पर ही होता है।

सरना ईसाई के बीच चल रहे झगड़े को यदि आप स्थानीय मुद्दों पर आधारित झगड़ा कहेंगे तो वहां बड़े पैमाने पर हो रहे धर्मान्तरण के षड्यंत्र पर मिटटी डालने जैसा होगा। क्योंकि एक आदिवासी ईसाई बनने के बाद फादर या पास्टर के अधीनस्थ एक धर्म संगठन की एक प्रजा बन जाता है। उसका सरनेम उसके त्यौहार यहाँ तक कि वह अब तक जिस संस्कृति में जिया उसके पुरखों ने जिस संस्कृति को सहेजा बचाया वह उसका शत्रु बना दिया जाता है। यानि वह एक पारंपारिक समाज से निकल कर मिशनरियों द्वारा स्थापित एक अलग समाज में प्रवेश करता है। यहाँ उसे अपना मन, शरीर, संस्कृति, जीवन मूल्यों के साथ सामाजिक मूल्यों, स्वर्ग नरक के विश्वास के साथ सामाजिक संबंधों को भी लेकर आना होता है। यहाँ वह आदिवासी समाज की तरह स्वतंत्र जीवन बसर नहीं कर सकता है। उसे साप्ताहिक गिरजाघर जाना रहता है। उसे पादरी के आदेश के अनुसार नये विश्वास के साथ न सिर्फ एकाकार करना होता है, बल्कि अपने बच्चों का जन्म संस्कार, शिक्षा-दीक्षा, विवाह और मृत्यु संस्करण भी अपनी ही ईसाई पद्धति में करना होता है। साथ ही उन्हें ईसाई बनने के बाद रोटी बेटी का रिश्ता भी अपने समाज से तोड़ना ही होता है।

इस मामले में आदिवासी समाज अत्यंत सरल, सीधा और प्रतिरोधीहीन साबित हुआ है। उन्हें मिशनरियों ने जो करने के लिए कहा वह करते गये, वे अनपढ़ थे, लेकिन आज्ञाकारी थे इसी का फायदा मिशनरियों ने खूब उठाया, अपने ही पूजा-पाठ, रीति-रिवाजों, परंपराओं का मखौल उड़ाने के लिए मजबूर किया गया। जिसका उन्होंने अक्षरशः पालन किया। नतीजा साल 2001 में ईसाई 10.93 लाख थे, जो 2011 में बढ़कर 14.18 लाख हो गए थे।

हालाँकि समाज में 10-15 वर्ष के बाद नयी पीढ़ी आती है। वह जो देखती है उसे ही दुनिया कहती है। आदिवासियों को अपने अतीत की कोई गौरवमयी कहानियाँ नहीं पढाई गयी आदिवासियों को अपने पुरखों की मजबूरियों के बारे कुछ भी नहीं मालूम था और न उन्हें बतलाने का कोई जरिया था बस मिशनरीज जो कहती गयी वह उस पर विश्वास करते गये।

नतीजा आज का आदिवासी, ईसाई बन कर अपने को जन्मना ईसाई मानता है। उनके पुरखों की बौद्धिक अपंगता का लाभ बाहर से धर्म लेकर आए मिशनरी ने कैसे उठाया उसे जानने में उन्हें कोई रूचि नहीं है। सरना उन्हें दुबारा वापिस लाने को प्रयासरत है नतीजा आज झारखंड में समाज खंड-खंड है। लेकिन गाँवों में अशिक्षितों के बीच आदिवासीयत की भावना अभी भी अखण्ड ही है। उन्हें पुनः अपनी महान संस्कृति से जोड़ने के लिए आज सरना संगठन उनके साथ सरना सनातन की बात कर रहे हैं। सरना वालों का एक बड़ा भाग ईसाईयों को अपना ही खून समझता है। ईसाईयों का भी समझदार हिस्सा सरना को अपने से अलग नहीं समझता है। लेकिन रोटी-बेटी की अलगाववादी विचारधारा ने सरना समाज को सबसे अधिक बाँट दिया है और उनमें ईसाईयों को अलग समझने की भावना भी बढ़ रही है। दोनों के मनोभावों को समझने के लिए सुक्ष्मदर्शी होने की जरूरत है। इसके बिना इसके मनोविज्ञान गाँठ समझना मुश्किल है। क्योंकि यह लड़ाई है हमारी सभ्यता और संस्कृति को बचाने की है। आज सरकार बदलने से जो वहां मिशनरीज खुश है उसका एक कारण यह है कि 2017 में भाजपा सरकार ने झारखंड में धर्म स्वतंत्र कानून बना था जिसका विपक्ष ने पुरजोर विरोध किया था। अब वहां फिर सरकार बदली है इसी कारण हो सकता है धर्म परिवर्तन करने वाले संगठन पादरी आर्च बिशप उत्साहित हो?

*- राजीव चौधरी*

प्रेरक प्रसंग

## वे ज्ञान-समुद्र थे

आर्यसमाज के इतिहास में पण्डित गणपतिजी शर्मा चुरू (राजस्थान) - वाले एक विलक्षण प्रतिभावाले विद्वान् थे। ऐसा विद्वान् यदि किसी अन्य देश में होता तो उसके नाम नामी पर आज वहाँ विश्वविद्यालय स्थापित होते। पण्डित गणपतिजी को ज्ञान-समुद्र कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के शब्दों में उनके पाण्डित्य की कहानी पढ़िए-

''पण्डित गणपति शर्मा शास्त्रार्थ करने में अत्यन्त पटु थे। मैंने उनके चार-पाँच शास्त्रार्थ सुने हैं। शास्त्रार्थ करते समय उनका यह नियम था कि शास्त्रार्थ के समय उन्हें कोई किसी प्रकार की सम्मति न दे और न ही कुछ सुझाने की इच्छ करे, क्योंकि इससे उनका काम बिगड़ता था। लुधियाना में एक बार शास्त्रार्थ था। पण्डितजी ने सनातनधर्मी पण्डित से कहा था-पण्डितजी! मेरा और आपका शास्त्रार्थ पहले भी हुआ है। आज मैं एक बात कहना चाहता हूँ, यदि आप सहमत हों, तो वैसा किया जाए। पण्डित के पूछने पर आपने कहा-महर्षि दयानन्दजी से लेकर आर्यसमाजी पण्डितों ने जो पुस्तकें लिखी हैं, मैं उनमें से कोई प्रमाण न दूँगा और इस विषय पर सनातनधर्मी पण्डितों ने जो पुस्तकें लिखी हैं, उनमें जो प्रमाण दिये हैं, आप उनमें से कोई प्रमाण न दें।

इसी प्रकार यदि आप चाहें तो जो प्रमाण आप कभी शास्त्रार्थ में दे चुके हैं और जो प्रमाण मैं दे चुका हूँ, वे भी छोड़ दें। आज सब प्रमाण नये हों। सनातनी पण्डित ने यह नियम स्वीकार नहीं किया। इससे पण्डितजी की योग्यता और स्मरणशक्ति का पूरा-पूरा परिचय मिलता है।''

*- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*

*साभार :*

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी***

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

## बढ़ते अपराध पर कैसे लगे अंकुश? एक सकारात्मक चिन्तन

**गंताग से आगे -**

एक अमेरिकी करोड़पति ने महान चित्रकार पिकासो को अपनी तस्वीर बनाने को दी। तस्वीर बनाने में पिकासो को दो साल लगए गए। वह करोड़पति इस बीच बार-बार अपने आदमी को पिकासो के पास भेजकर पता करता कि तस्वीर बनी या नहीं। हर बार पिकासो का जवाब होता, थोड़ा धैर्य रखिए, भगवान भी आपको बनाते हैं तो नौ महीने लगते हैं, फिर मैं तो ठहरा साधारण मनुष्य। दोबारा आपको बना रहा हूं, दो-तीन साल लग सकते हैं। दो वर्ष बाद पिकासो ने उस करोड़पति को खबर भेजी कि चित्र तैयार है, आकर ले जाएं। तस्वीर काफी सुंदर थी। करोड़पति को वह बहुत पसंद आई। उसने पूछा-इसका दाम? पिकासो ने कहा, 'पांच हजार डॉलर!'

करोड़पति चौक उठा और बोला? 'क्या? थोड़ा सा कैनवास और थोड़े से रंग और इसका दाम पांच हजार डॉलर? क्या मजाक करते हो? इस कैनवास के टुकड़ों और इन रंगों की इतनी कीमत? पांच-दस डॉलर में तो ये सारे सामान बाजार में मिल जाएंगे।' पिकासो ने अपने सहयोगी को कहा, 'जा भीतर, इससे बड़ा कैनवास और रंग लेकर आ और इन्हें दे दे। ये जितनी कीमत दें रख लें।' उसने ऐसा ही किया। सारा सामान उस करोड़पति के सामने रख दिया और कहा, 'ये रहा आपका पोर्ट्रेट अब आपकी जो मर्जी दस-पांच डॉलर देकर इन्हें ले जाएं।' करोड़पति घबराकर बोला, 'ये सब ले जाकर मैं क्या करूंगा?' तब पिकासो ने कहा, 'फिर याद रखो, तस्वीर रंगों और कैनवास का जोड़ नहीं है, कैनवास और रंगों से अधिक तस्वीर में भाव और भंगिमा का महत्व होता है। अब पांच हजार में निपटारा नहीं होगा। पचास हजार देते हो तो ठीक वरना यह तस्वीर अब नहीं बिकेगी।' वह तस्वीर आखिर पचास हजार डॉलर में बिकी।

इससे पता चलता है कि मनुष्य जीवन की तस्वीर केवल बाहर के चेहरे-मोहरे से नहीं बनती बल्कि अंतकरण के भाव ही व्यक्ति को देवता या राक्षस बनाते हैं। मनुष्य के चित्त पर जन्म-जन्मांतरों के कर्मों की छाया अंकित होती है। उसी के अनुसार मनुष्य अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार

# आन्तरिक परिवर्तन से सम्भव होगा समाज में बदलाव

*समाज में लगातार बढ़ रही हिंसा और अपराधिक मानसिकता को ध्यान में रखते हुए आर्य संदेश के पिछले दो अंकों में हमने आंतरिक परिवर्तन...... शीर्षक पर सारगर्भित लेख प्रकाशित किए। इस लेख में हमने मानव समाज को जगृत करने का प्रयास करते हुए बताया था कि मनुष्य को सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए सोच-विचार अवश्य करना चाहिए, जीवन में बदलाव की संभावना हमेशा बनी रहती है, जब जागो तभी सवेरा, कैसे आता है- गुण-दोषों में परिवर्तन, आदि बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा के बाद अब आगे.....*

*- आचार्य अनिल शास्त्री*

ही जाना जाता है।

मानव शरीर से निकलने वाले ओरे को हिन्दी में आभामंडल कहते हैं। ओरे का प्रकाश हमारे चेहरे से लेकर गर्दन तक पूरी तरह से फैला हुआ रहता है, जैसे आपका शरीर का आकार है, वैसे ही आपका ओरा है, जो छः रंगों में बंटा हुआ है। छः रंग आपके शरीर से प्रकट हो रहे हैं। आप कहेंगे कि हम तो आदमी की शक्ल देखते हैं, हमें तो कोई रंग दिखाई नहीं देता। हम कैसे मान लें कि ये सब है। जो क्रिलियन फोटोग्राफी है, उस कैमरे से जैसे आपका फोटो लिया जाएगा तो देखेंगे कि शक्ल आपकी है, रंग आपका पूरा- पूरा है लेकिन उसके साथ में बाहर से एक ओरा दिखाई देगा, वही आपका आभामंडल है जो आपको दिखाई दे रहा है।

दुनिया में जितने लोग हैं सबका ओरा अलग-अलग है। यदि सबके फोटो लिए जाएं तो सबके शरीर से अलग-अलग रंग प्रकट होंगे। किसी का रंग लाल होगा और वह तेजी से निकल रहा होगा, किसी का नीला या पीला रंग बाहर तेजी निकल रहा है। ये रंग-रश्मियां हैं, जो शरीर के अंदर से बाहर आती हैं। इनमें एक बाह्य ओरा होता है। बाह्य ओरे का काम है कि कोई भी नेगेटिविटी जब बाह्य ओरे से आकर टकराती है, तो अगर वह ओरा शक्तिशाली है तो वह बाहर के बाहर ही उस नकारात्मकता को दूर कर देगा। जैसे किसी आदमी ने चलते-चलते राह में आपको कुछ बोल दिया या वह आपको देखकर बड़बड़ा रहा है। तो आपका ओरा बाहर ही बाहर उसको सह जाता है, वहीं का वहीं उसकी बात को खत्म कर देता है। किसी ने देखकर आपको नाक-भौं सिंकोड़ दीं, किसी ने अंगूठा दिखा दिया, किसी ने ताना मार दिया। अगर आपका बाह्य ओरा मजबूत है तो आप उसकी ओर देखकर बाहर से बाहर ही मुस्करा देंगे और उसे उसके हाल पर छोड़कर आगे बढ़ जाएंगें, आपको उसके एक्शन से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। किंतु उसका ओरा, अगर ताकतवर है और उसकी बात आपके मध्य ओरे तक पहुंच गई तो आपका जो सूक्ष्म जगत है, मानसिक स्थिति है, वह उसको हिला देगी और हो सकता है आप उसके एक्शन का रियेक्सन देने में जुट जाएं। झगड़ा, तकरार तक नौबत आ जाए। किंतु अगर आपका बाह्य ओरा स्ट्रांग है तो आपको कोई फर्क नहीं पड़ेगा और आप हाथी की मस्त चाल चलते रहेंगे।

मनुष्य के शरीर में एक दूसरा ओरा होता है, वह आपके अंदर तक प्रभाव डालता है। बाह्य वातावरण से ही आप इतना प्रभावित होते हैं कि जैसे आप कहीं बैठे हुए हैं और आप वहां किसी को जानते-पहचानते नहीं हैं, लेकिन वहां पर बैठे हुए कई लोगों में से कोई एक आदमी आपको बहुत अच्छा लग रहा है, आप वहां किसी को भी नहीं जानते हैं, लेकिन किसी एक को पहली बार देखकर ही आपको अच्छा लगता है, तसल्ली हो रही है, शांति मिल रही है। उससे बात करने का आपका मन कर रहा है और वह भी आपसे बात करना चाहता है, धीरे-धीरे किसी बहाने से आप एक-दूसरे से बात करने लग जाते हैं। इसका मतलब है कि आपका ओरा उसके ओरे से मैच कर रहा है।

ओरे की एक तीसरी स्थिति बड़ी अजीब होती है। किसी आदमी का बाह्य ओरा अच्छा नहीं है, लेकिन उसका मध्य ओरा ठीक है। जब पहली बार उसको देखते हैं, उसकी अजीब-सी शक्ल है, उसकी अजीब-सी बात-चीत है, तो उसे देखते ही आपको गुस्सा आ जाता है, लेकिन थोड़े दिन उससे बात-चीत करने लग जाएं तो उसका मध्य ओरा आपको प्रभावित करने लगता है। फिर उसकी बातचीत आपको अच्छी लगने लगती है, आपकी सोच बदल जाती है, पहले आपको उसे देखकर गुस्सा आता था, बाद में वह अच्छा लगने लगता है। फिर आप सोचने लगते हैं कि आदमी ऊंचा है, कपड़े ही सादे पहनता है, देखने में ही ऐसा लगता है। लेकिन आदमी विचारों से ऊंचा है, फिर वह आपको पसंद आने लगता है।

लेकिन उससे भी आगे एक आदमी वह है जिसका बाह्य ओरा बहुत अच्छा है, देखने-दिखाने लायक है, उसका बहुत अच्छा चेहरा-मोहरा है, चार दिन उसके साथ रहें तो फिर उससे मन भर जाता है। उसके साथ में रहने वाला आदमी कहने लगता है कि इसके साथ नहीं बैठना चाहिए। लेकिन इसके बाद जो सबसे श्रेष्ठ ओरा है, जिसमें किसी आदमी के साथ रहते-रहते जब व्यक्ति उसकी ऊंचाइयों तक पहुंचने लगे, तब उसको अहसास होता है कि यह आदमी कितना महान है, इसके विचार कितने अच्छे हैं, फिर ऐसे आदमी को चाहे दुनिया कुछ भी कहे। आदमी सोचने लगता है कि यह तो समाज का बाह्य रूप है, यहां तो सभी एक-दूसरे की बुराई करते हैं। वह स्वयं सोचता है और जो बुराई करते हैं उन्हें कहता भी है कि- जब आप उसके वास्तविक रूप को देखोगे, आपको पता लगेगा कि दुनिया तो बहुत गंदी है और वास्तव में यह आदमी बहुत ऊंचा है, जब आपको उसके अंदर की गहराई का पता लगता जाएगा और फिर आप सारी दुनिया का विरोध होने के बाद भी उसके साथ खड़े हो जाएंगे, पूरी ताकत के साथ खड़े हो जाएंगे। ये ओरे के अकार-प्रकार तथा प्रभाव हैं। इससे पता चलता है कि परमात्मा ने हमारे सूक्ष्म शरीर के अंदर ओरे के रूप में ऐसी विशेषता प्रदान की हुई है कि हमें पता भी नहीं चलता और भाव तरंगें अपना कार्य करती रहती हैं। इसलिए अपने शरीर को ही सजाने-संवारने से जीवन में परिवर्तन नहीं होता, अंत:करण के परिवर्तन से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व में, परिवार में, समाज में, देश और दुनिया में, परिवर्तन सम्भव होगा। तभी जीवन में परिवर्तन आएगा। अतः बाहर की यात्रा को बंद करके थोड़ी अन्तर्यात्रा करें। ❑

## आर्यसमाज के सेवा संस्थान 'सहयोग' द्वारा यज्ञ एवं वस्त्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन

देश और दुनिया में जहां एक तरफ अंग्रेजी महीने के हिसाब से नव वर्ष 2020 का स्वागत किया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर कड़ाके की ठंड में धूंध और कोहरे के बीच गरीब लोग, जिनके पास पर्याप्त ओढ़ने-पहनने के गर्म वस्त्र भी नहीं हैं। इस कड़कड़ाती ठंड में स्वयं को मजबूर, बेबस और लाचार महसूस कर रहे निर्धन, गरीब, जरूरतमंद लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए विख्यात अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग ने 30 और 31 दिसंबर 2019 को के-ब्लॉक जहांगीरपुरी में यज्ञ के आयोजन के साथ वस्त्र वितरण किया। इस अवसर पर एम. डी.एच. कंपनी के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में यज्ञ में आयी महिलाओं ने एम.डी.एच. कंपनी को शुभकामनाएं दी और महाशय धर्मपाल जी का धन्यवाद किया। 31 को के-ब्लॉक जहांगीरपुरी में वृद्ध, युवा और बच्चों को गर्म कपड़े बांटे गए। जिसमें गर्म कपड़ों को पाकर सभी के चेहरे खिल उठे। भारी संख्या में महिला, बच्चे और वृद्धजन उपस्थित थे। इस अवसर पर आर्य समाज मंदिर के-ब्लॉक जहांगीरपुरी के मंत्री श्री रामभरोसे जी भी उपस्थित रहे। सभी ने एम.डी.एच. कंपनी के प्रति आभार जगाया और महाशय धर्मपाल जी के लिए सुदीर्घ सुखमय जीवन की कामना की।

आर्यसमाज की सेवा संस्था अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के अन्तर्गत कार्यरत 'सहयोग' द्वारा जहांगीरपुरी क्षेत्र यज्ञ एवं जरुरतमंद गरीब लोगों को गर्म वस्त्रों का वितरण किया गया।

## प्रेरक कथानक : लगन और निष्ठा से पूर्ण होते हैं संकल्प

# कैसे पूरा हुआ-सत्यार्थ प्रकाश को घर-घर तक पहुंचाने का संकल्प?

मनुष्य का मन बड़ा बहाने बाज है। अगर कोई व्यक्ति अपने किसी मित्र को किसी अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करे कि भाई जीवन क्षणभंगुर है, समय का कोई पता नहीं चलता, किसी को क्या पता कब काल का नगाड़ा बज जाए? थोड़ा समाज सेवा का कोई कार्य अवश्य कीजिए, किसी परोपकार में सहयोगी बन जाइए। धर्म के प्रचार-प्रसार में अपनी कोई मुख्य भूमिका निश्चित कीजिए। तन-मन, धन से परमार्थ कीजिए। दुनिया में कुछ भी साथ नहीं जाता, अपने हाथों से कुछ ऐसे पुण्य कर्म कीजिए, जो सेवा-साधना के क्षेत्र में प्रमाण बन जाएं। इन सब बातों को व्यक्ति बड़े अनमने मन से सुनता है और तपाक से कहता है कि आपकी सारी बातें तो ठीक हैं, ये सब तो मुझे भी पता है। लेकिन क्या करूं भाई मुझे समय ही नहीं मिलता, बहुत व्यस्त जीवन है, घर के कार्य, बच्चों की जिम्मेदारी, नौकरी और व्यवसाय का बोझ इतना है कि मरने के लिए भी टाइम कहां है? इसका मतलब है कि कुछ न करने के लाख बहाने, करने वाले का केवल और केवल संकल्प ही मनुष्य को महान बनाता है।

पंजाब प्रांत के एक गांव के पोस्टमैन का आदर्श उदाहरण देखिए। वह पोस्टमैन महर्षि देव दयानंद जी के प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश से बहुत प्रभावित था। उसकी सोच थी कि इस महान ग्रंथ की ज्ञान किरणें घर-घर तक पहुंचनी चाहिए। वह सारे दिन घर-घर जाकर पत्र बांटता और सुबह -शाम सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करता। लेकिन सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार के लिए उसके पास न समय बचता और न ही इसका कोई खास तरीका उसे समझ आता। किंतु उसके मन में यह शुभ विचार बार-बार उथल-पुथल मचाता था कि इस अमृत तुल्य ग्रंथ का प्रसाद घर-घर तक पहुंचाना ही है और मैं जरूर पहुंचाऊंगा, संसार में कोई भी सेवा तन-धन से तभी संभव होती है, जब मन में सेवा का सच्चा भाव हो।

इस पोस्टमैन ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार की एक दिव्य योजना बनाई और उसको बड़े सुनियोजित तरीके से चरितार्थ भी किया। इस महान सेवक ने दो सत्यार्थ प्रकाश अपने बैग में रख लिए। यह जहां भी जाता सत्यार्थ प्रकाश की दो प्रतियां अपने साथ हमेशा रखता। इसका काम तो घर-घर जाकर पत्र बांटना था। जिस घर में यह पत्र देने के लिए जाता, उसका दरवाजा खटखटाता और जैसे ही घर के अंदर से उस घर का सदस्य पत्र लेने बाहर आता तो वह पोस्टमैन उसे प्रेम से नमस्ते करके उसका पत्र दे देता और फिर विनम्रता से कहता भाई, मेरे पास एक पुस्तक है, क्या आप मुझे इसका एक पैराग्राफ पढ़कर समझा देंगे? आपका मेरे ऊपर बड़ा उपकार होगा, पढ़ना तो मैं भी जानता हूं, लेकिन मुझे ज्यादा समझ नहीं आता, अगर आप इसे पढ़कर मुझे थोड़ा समझा देंगे तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।

पोस्टमैन पहले से ही सत्यार्थ प्रकाश में निशान लगाकर रखता था, क्योंकि वह समझता था कि इस व्यक्ति को कौन-सी बात ज्यादा प्रभावित करेगी। पोस्टमैन के हाथों से सत्यार्थ प्रकाश लेकर वह व्यक्ति पढ़कर सुनाने लगा। सत्यार्थ प्रकाश तो प्रकाश का पुंज है, उसको कहीं से भी खोलिए, पढ़िए, समझिए, उसमें से तो रोशनी मिलेगी। जैसे मिस्री का टुकड़ा होता है, उसे किधर से भी चखिए, वह तो मीठी ही लगेगी। लेकिन फिर भी वह पोस्टमैन हर व्यक्ति की सोच के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठों में निशान लगाकर रखता था। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने वाले उस व्यक्ति के द्वारा जो समझाया जाता, उसे पोस्टमैन बड़े ध्यान से सुनता रहता था। बाद में वह पाठक कहता कि भाई यह ग्रंथ तो बड़े कमाल का है, इसमें तो बहुत अच्छी-अच्छी बातें बताई गई हैं। इसे कहां से लाए हैं आप? फिर पोस्टमैन कहता कि अगर आपको पढ़कर अच्छा लग रहा है तो आप इसे कुछ दिन के लिए अपने पास रख सकते हैं। मेरे पास इसकी एक प्रति और है, मैं बाद में आप से ले लूंगा। लेकिन आप सत्यार्थ प्रकाश को ऐसे ही मत रख देना, आप इसे पढ़ना जरूर। वह पाठक व्यक्ति कहता है कि भाई मेरा यह आपसे वायदा है, मैं इसे स्वयं भी पढ़ूंगा और अपने परिवार को भी पढ़कर सुनाऊंगा, यह इतनी अच्छी पुस्तक है, इसे तो हर व्यक्ति को पढ़ना ही चाहिए।

पोस्टमैन फिर दूसरे घर में इसी तरह से पुन: प्रयोग करता है। दूसरा सत्यार्थ प्रकाश दूसरे व्यक्ति को दे देता है। पिफर कुछ दिन बाद पहले व्यक्ति से पूछता है कि आपने सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय किया, आपको कैसा अनुभव हुआ? आपको कौन-कौन सी मुख्य शिक्षाएं प्राप्त हुई, उसमें से अगर आप मुझे कुछ सार में बताएं तो बड़ा अच्छा होगा। सत्यार्थ प्रकाश का वह प्रबुद्ध पाठक सत्यार्थ प्रकाश की प्रशंसा करते हुए कहता है- पोस्टमैन साहब, सत्यार्थ प्रकाश कोई साधरण पुस्तक मात्र नहीं है, यह तो व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया के लिए अमृत है, अंधेरों से प्रकाश की ओर जाने की पावन प्रेरणाओं है, सत्यार्थ प्रकाश सही अर्थों में जीवन जीने की कला सिखाता है, इसे पढ़कर मैं धन्य हुआ और मेरे परिवार में जागृति आई है, मैं आपका सदैव आभारी रहूंगा।

इसी तरह वह पोस्टमैन सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार-प्रसार करता रहा और उसने धीरे-धीरे कई गांवों में घर-घर सत्यार्थ प्रकाश का ज्ञान पहुंचा दिया, उसने अपना संकल्प पूरा कर दिया, अनेक लोगों के जीवन में उजाला कर दिया। वह अपने कर्त्तव्य को भी निभाता रहा और परोपकार भी करता रहा, इस तरह उसकी योग्यता और कुशलता निरंतर बढ़ती गई।

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

ओ३म्

## आर्य एवं राष्ट्रीय पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2076-77 तदनुसार सन् 2020

| क्र. सं. | | पर्व का नाम | चन्द्र तिथि | अंग्रेजी दिनांक | दिन |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | | लोहड़ी | माघ कृष्ण, 3 वि. 2076 | 13/01/2020 | सोमवार |
| 2. | | मकर-संक्रान्ति | माघ कृष्ण, 5 वि. 2076 | 15/01/2020 | बुधवार |
| 3. | | गणतन्त्र दिवस | माघ शुल्क, 2 वि. 2076 | 26/01/2020 | रविवार |
| 4. | | वसन्त-पंचमी | माघ शुक्ल, 5 वि. 2076 | 30/01/2020 | गुरुवार |
| 5. | | सीताष्टमी | फाल्गुन कृष्ण, 8 वि. 2076 | 16/02/2020 | रविवार |
| 6. | ऋषि-पर्व | महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव | फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2076 | 18/02/2020 | मंगलवार |
| 7. | ज्योति-पर्व | शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव) | फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2076 | 21/02/2020 | शुक्रवार |
| 8. | वीर-पर्व | पं.लेखराम बलिदान दिवस (वीर तृतीया) | फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2076 | 26/02/2020 | बुधवार |
| 9. | मिलन-पर्व | नवसंस्येष्टि (होली) | फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2076 | 09/03/2020 | सोमवार |
| 10. | | आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद | चैत्र शुल्क, 1 वि.2077 | 25/03/2020 | बुधवार |
| 11. | | रामनवमी | चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2077 | 02/04/2020 | गुरुवार |
| 12. | | वैशाखी | बैशाख कृष्ण, 6 वि. 2077 | 13/04/2020 | रविवार |
| 13 | | पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस | बैशाख शुक्ल, 3 वि.2077 | 26/04/2020 | रविवार |
| 14. | | हरितृतीया(हरियाली तीज) | श्रावण शुक्ल, 3 वि.2077 | 23/07/2020 | गुरुवार |
| 15. | वेद-प्रचार समारोह | श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन/ हैदराबाद सत्याग्रह दिवस | श्रावण पूर्णिमा, वि. 2077 श्रावण पूर्णिमा, वि. 2077 | 03/08/2020 | सोमवार |
| 16 | | श्री कृष्णजन्माष्टमी | भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2077 | 12/08/2020 | बुधवार |
| 17 | | स्वतन्त्रता दिवस | भाद्रपद कृष्ण, 11 वि. 2077 | 15/08/2020 | शनिवार |
| 18. | | गांधी जयन्ती/लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती | द्वि.आश्विन कृष्ण, 1 वि. 2077 | 02/10/2020 | शुक्रवार |
| 19. | | विजय दशमी/दशहरा | द्वि.आश्विन शुक्ल, 10 वि.2077 | 25/10/2020 | रविवार |
| 20. | | स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस | दि.आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2077 | 28/10/2020 | बुधवार |
| 21. | क्षमा-पर्व | दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव) | कार्तिक अमावस्या, वि. 2077 | 14/11/2020 | शनिवार |
| 22. | बलिदान-पर्व | स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस | मार्ग. शुक्ल, 9, वि. 2077 | 23/12/2020 | बुधवार |

**नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।**

**- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001**

Continue from last issue

# Vedic Polity : The Top Structure

The ruler and the subjects, i.e. the king and the people, should jointly manaage the state. There must be three separate houses of Parliament : (a) *Vidyaryasabha,* to manage the educational and research activities, (b) Dharmarya Sabha, to make and administer the law, and (c) *Rajarysabha,* to look after the management and conduct of other matters, inclusive of military and commerce, etc. ; though a separate 'Excutive 'Council, known, as 'Samiti' should be created for defence and other strategic matters, and military should also have its own separate set up. The membership of these houses should be restricted only for the ablest and the religious people only. The presiding authority, or the President, of this 'Parliament' or 'Sabha, is the authorised supreme administrator, or king. Though the people are subordinate to him in their day to day work ultimately he himself is governed and subordinat to the people, because if otherwise executives try to become independent of the people, they destroy the peopie, becoming mad of their powers. Therefore no one should be allowed a free hand completely in running the administration.

**Qualifications for Rulership**

Only those should be eligible for presidentship of *Sabha* and thereby for kingship, who are the best and ablest administrators. conquerors of enemies, performers of extra- ordinary acts, and have the best of character and nature. Such a king alone can become *Chakravarti,* or Emperor, and can administer judiciously, without any favour, with an the humility, and can defend his kingdom from all around. Though he is to administer the law, but the law should govern the ruler and the people equally. On subverting the law, even the king should be punished, more severely than the subjects. It is therefore prescribed that he should possess knowledge of all the Vedic scriptures, as also he- should appoint the Vedic scholars as his ministers from amongst the most scholarly, religious and restrained people. All the members of the different houses of Parliament as. well as Council along with the President or King and the Commander-in-chief should lead a restrained life, practis- ing *Yoga,* and knowing Theology and Economics and social sciences. Only then they can contain the external subjects.

**The Executive**

There should be eight main ministers, who must be Vedic scholars, heroic, of good family, well tested, and religious minded. Apart from them, as many more execu- tives are required for running the administration smoothly they might be appointed from amongst the alert, strong, educated and highly skilled people. The chief executive i.e, the President or the king, should keep treasury and Home-administration directly under his own charge, the ministers being given the charge of law and order, along with other administrative portfolios. The subjects like treaties and wars, as well as the administration of embassies and ambassadors, etc., should be directly under the charge of the Parliament. The defence services as well as the defence installations should be planned to protect the kingdom adequately.

Only the most reliable persons should be employed for tax-collection, etc. The people should be treated like one's own children, Various scholary presiding authorities should be appointed by the Parliament itself, so that a close watch is kept on administration. The works of Embassies and of intelligence should be governed by the President himself.

**Pay and Pension**

During active services, an employee should get in or by way ef annual or monthly pay an emolument sufficient enough to enable him in household easily and in a bit richer way. After retiring from service, he should be given half of that, till his death. His progeny should possibly be emplyoed after him. In case of his death, his wife during her life, and his progeny till he starts earning shoud be given adequate help from the state. They should not get anything. if they become bad persons.

**Law and State**

The head of the state should lead a regulated life. His official work should be well arranged and orderly. His objective should be the welfare and happiness of the people.

*Dharma* is called as Vrisha. 'Vrishal' is that who des- troys and distorts that Dharma and Only Dharma follows the soul of a man, rest of everything remains here.

If a sin is made in anyone's domain, only onefourth result of it is enjoined upon the sinner, one fourth going to the witness, who keeps mum even after seeing it, one fourth being shared by the members of the Parliament, while the last quarter goes to the President or king himself. But if a deplorable man is deplored and the punishable punished, the administrators are spared from its effect. Therefore, it must be seen that no sinner goes scotfree. The punishment should be severest, so that it may serveas an eye-opener for others. If the President or his relative make some violations, they should be punished several time more severely and heavily than the common people. Males or females, violating the laws of *Dharma,* should be punished severely, and if such people are related to the authorities, they should get still more severe punishment. Because the people follow their rulers, therefore, the ruling class should not violate the laws in any way. Instead they should act always according to the law.

*To be continued......*

***With thanks By: "Flash of Truth"***

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य विद्या परिषद दिल्ली की वार्षिक बैठक 18 दिसंबर 2019 को एस एम आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में चेयरमैन सत्यानंद आर्य जी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस बैठक में पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता सुरेंद्र रेली, सतीश चड्डा जी, राजीव चौधरी, अरुण प्रकाश वर्मा, सुरेश चंद गुप्ता, नीरज आर्य, उमाशशि दुर्गा, अमृत पाल, वीना आर्या, तृप्ता शर्मा, उषा रिहानी, नीरज मेहंदीरत्ता, एवं विभिन्न विद्यालयों के प्रधान, मेनेजर और प्रधानाचार्यों ने भाग लिया।

महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने आए हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया और कहां पिछली बैठक में हमनें छात्रों को संस्कार देने के लिए सात विषय रखे थे। ईश्वर, अंधविश्वास और पाखंड, कर्म और कर्मफल, राष्ट्रीयता, शाकाहार, नशा मुक्ति, शारीरिक व्यायाम और सामाजिक सम्बन्ध और व्यवहार। डॉ. उमाशशि दुर्गा ने बताया कि इन विषयों पर लिखने के लिए काफी कार्य हो चुका है।

उन्होंने अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं के बारे में कहा कि इस वर्ष चित्रकला नारालेखन, एकांकी नाटक, आशुभाषण प्रतियोगिताएं होंगी इसके साथ ही उन्होंने सुझाव दिया कि आधुनिक विषयों पर वाद विवाद प्रतियोगिता होनी चाहिए। जिस पर सभी ने अपनी सहमति प्रदान की। कई ऐसे विषय है जिसका सभी को सही जानकारी नहीं है जैसे मनुस्मृति आदि। रैली जी ने कहा कि इस के लिए सेमिनार होने चाहिए। अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जाए। लिखित में विषय सामग्री होनी चाहिए।

आठवीं कक्षा तक खेल-कूद प्रतियोगिताएं होंगी जिसके लिए तीन सदस्यों - श्री कृपाल सिंह जी, श्री बनारसी जी, एवं श्री नीरज आर्य जी की समिति बनाई गई। सभी की सहमति से नैतिक शिक्षा की परीक्षाओं की तिथि 23 जनवरी निर्धारित की गई। विनय आर्य जी ने बैठक की कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए कहा कि हम एक वर्ष छोड़ कर वार्षिकोत्सव समारोह मनाते हैं इस वर्ष 25 जुलाई 2020 को यह समारोह मनाया जाएगा। स्थान और सुंदर विषय का चयन किया जाएगा। सच्ची घटनाओं पर आधारित नाटिकाओं का मंचन किया जाएगा। सभी विद्यालय एक एक नाटिका तैयार करें। सतीश चड्डा जी ने कहा कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस पर हर वर्ष शोभा यात्रा निकाली जाती है। इस बार डी ए वी स्कूलों के विद्यार्थी भी इस में शामिल होंगे। झांकियां भी निकाली जाएगी। श्री विनय आर्य जी ने प्रसिद्ध उद्योगपति पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का स्वागत करते हुए कहा कि उनके उद्योग को 100 वर्ष पूरा होने पर 11 जनवरी 2020 में इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है। उसमें आर्य विद्या परिषद द्वारा भी प्रस्तुति दी जाएगी। अधिक से अधिक संख्या में बच्चे पहुंचे। दयानंद सेवा संस्थान की ओर से आर्य प्रतिभा विकास के अंतर्गत गरीब प्रतिभाशाली बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा दी जा रही है। उनके भोजन और आवास की व्यवस्था है। दिव्यांग बच्चों को भी निशुल्क पढ़ाया जा है। दो बच्चे जिनके हाथ नहीं है वह पैरों से लिखकर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। सत्यानंद आर्य जी ने आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। शांति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई। **- श्रीमती तृप्ता शर्मा**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

## वार्षिक नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन

**गुरुवार 23 जनवरी, 2020 प्रात: 9:30 बजे**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली से सम्बद्ध/असम्बद्ध दिल्ली स्थित आर्य विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू किया गया है, के सभी विद्यार्थियों (कक्षा-1 से 12 तक) की नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन 23 जनवरी, 2020 को प्रात: 9:30 बजे सभी विद्यालयों में किया जाना निश्चित किया गया है। अत: समस्त विद्यालयों के प्रधानाचार्य महानुभावों से निवेदन है कि अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या कक्षावार सूची बनाकर यथाशीघ्र भेजे दें, जिससे संख्यानुसार विद्यालयों को प्रश्नपत्र भेजे जा सकें। सभी विद्यालयों की परीक्षा एक ही दिन एक ही समय सम्पन्न होगी।

**- सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तोता (9810855695)**

## सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/ परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***9650183335***

आर्य समाज के महापुरुषों के नाम पर मार्ग, पार्क एवं चौराहों के नामकरण

## आवश्यक सूचना

अपने सेवा प्रकल्पों एवं लोकोपकारी कार्यों के कारण विख्यात आर्य समाज का भारत में अपना विशेष स्थान है। सम्पूर्ण भारत में सैंकड़ो से ज्यादा स्थानों पर सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहों के नाम आर्य समाज एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी विरजानंद, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों के नाम पर रखे गए हैं, यह अपने आपमें गौरव की बात है, किन्तु इनकी जानकारी एवं रिकार्ड न हो पाना एक खेद का विषय भी है।

अतः भारत की समस्त आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य संस्थानों के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं आर्यजनों से अनुरोध है कि आप कहीं भी आर्य समाज एवं आर्य महापुरुषों के नाम पर किसी भी सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहे को देखें या आपके क्षेत्र में ऐसा कोई नया नामकरण हुआ हो तो कृपया इसकी सूचना/फोटो/सम्बन्धित प्रस्ताव/जानकारी **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15-हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें अथवा 9650183339 पर व्हाट्स एप्प पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

## वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के समस्त वैदिक उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक में आर्यजगत के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक महानुभावों के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो के साथ प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित किया है।

अतः समस्त उपदेशक/भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय - अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता/प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें पुस्तक में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण **'सम्पादक, वैदिक उपदेशक/भजनोपदेशक विरणिका'** के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर प्रेषित करें। - *महामन्त्री*

## वानप्रस्थी महानुभाव अपना विवरण भेजें

हमारे सभी आदरणीय आर्य समाजी महानुभावों के मन में वैदिक धर्म के अनुसार आश्रम व्यवस्था के प्रति अटूट निष्ठा प्रशंसनीय है। जीवन के तीसरे वानप्रस्थ आश्रम के लोग आर्य समाज की सेवा में तन-मन-धन से संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उन समस्त महानुभावों से अनुरोध करती है जिन्होंने चाहे वानप्रस्थ दीक्षा ली हो या न भी ली हो किन्तु अगर उनके मन में आर्य समाज के प्रचार और सेवा कार्यों में रुचि है और वे महानुभाव महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। कृपया वे सभी सज्जनवृन्द अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001'** के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। - *महामन्त्री*

## शोधकर्त्ता एवं शोध संस्थाओं के लिए सूचनार्थ

समस्त पाठकों एवं आर्यजनों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य समाज, वैदिक धर्म एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से संबंधित विषयों पर शोध करने वाले विद्यार्थियों तथा शोध संस्थानों के लिए सेवा, सहयोग एवं सहायता कार्य आरम्भ किया जा रहा है। समस्त शोधार्थी महानुभाव जो उपरोक्त विषयों पर शोध कार्य कर रहे हैं तथा किसी प्रकार के सहयोग, सेवा या सहायता के इच्छुक हैं से निवेदन है कि वे अपना प्रोजैक्ट/शोध विषय से सम्बन्धित जानकारी तथा शोध कार्य में अपेक्षित सहयोग **"संयोजक (शोध)"** के नाम "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001" के पते पर लिखकर भेजें। - *महामंत्री*

## घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनो से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुनः दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। - *महामन्त्री*

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
**"सत्यार्थ प्रकाश"**
**पढ़ें और पढ़ावें**

पृष्ठ 5 का शेष

इससे ज्ञात होता है कि अगर व्यक्ति कोई शुभ संकल्प धरण करे और उसे दृढ़निश्चय के साथ निभाए तो दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है, कोई भी व्यक्ति उस पोस्टमैन की तरह अपना कार्य करते-करते सत्यार्थ का प्रचार-प्रसार कर सकता है, पूरी दुनिया के लिए उदाहरण बन सकता है। जहां चाह, वहां राह। विपरीत परिस्थितियों में भी अगर मन में सच्ची लगन है, मानव सेवा का संकल्प है तो व्यक्ति लाख रुकावटों के बावजूद भी सेवा पथ पर आगे बढ़ता जाता है।

- *आचार्य अनिल शास्त्री*

## आर्यसमाज की ऐतिहासिक घटनाएं

आर्यसमाज का इतिहास घटनाओं का इतिहास है। आर्यसमाज के इतिहास को बनाने में आर्यसमाजी बने व्यक्ति के साथ घटित घटनाओं का विशेष योगदान रहा है। आपके आर्य परिवार में भी किसी ऐतिहासिक घटना का होना सम्भव है।

अतः आप सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि यदि आपके परिवार सदस्य के आर्य बनने अथवा किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित के साथ ऐतिहासिक घटना घटित हुई हो या कोई ऐसी घटना जिसे आप आर्यसमाज के इतिहास के सम्बन्ध में ऐतिहासिक समझते हों और आपकी जानकारी में हों, हमें भेजने की कृपा करें। आपकी ऐतिहासिक घटना को आर्यसन्देश साप्ताहिक में जनसाधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जाएगा। - *सम्पादक*

पृष्ठ 2 का शेष

एक किस्म से कहें तो आर्य समाज प्रतिवर्ष हिन्दू समाज के जागरण का एक प्रहरी बनकर पुस्तक मेले में जाता हैं।

हिंदी, अंग्रेजी, बंगला एवं उर्दू में सत्यार्थ प्रकाश लोगों को उपलब्ध कराता मिलेगा। स्वामी दयानन्द जी के अन्य ग्रंथो संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्योद्देश्यरत्न माला आदि को सस्ते मूल्य पर उपलब्ध कराया जाता है। हम आशा करते है कि भविष्य में भी आर्यसमाज पुस्तक मेलों के माध्यम से वैदिक धर्म के नांद को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचायेगा। आप सभी से भी अनुरोध है एक बार पुस्तक मेले में जरुर पधारिये आर्यसमाज के स्टाल पर आकर इस वैदिक नांद और अधिक गुंजायमान कीजिए।

- *सम्पादक*

## वैदिक धर्म अपनाया

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी नई दिल्ली मानव सेवा के लिए अपने आपमें अहम् भूमिका निभा रहा है। श्री वेद प्रकाश जी के निर्देशन में 24 दिसंबर 2019 को पूर्वी यूरोप की निवासी सुश्री कटरजियना मार्टा लंबुजियंकसा, सुपुत्री श्री माईकल लंबुजियंकसा ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म अपनाया इस अवसर पर पूर्ण वैदिक रीति से शुद्धिकरण के बाद यज्ञोपवीत धारण किया। वैदिक धर्म में दीक्षित इस युवती ने 27 दिसंबर 2019 को आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी के पुरोहित्य में प्रवीण कुमार धनकडं सुपुत्र श्री रणवीर धनकड़ के संग वैदिक रीति से विवाह किया। - *मन्त्री*

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

**नैतिक शिक्षा की पुस्तकें**

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

**आकर्षक छूट 25%**

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ
**सत्यार्थ प्रकाश**
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| • प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| • विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| • स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 02-03 जनवरी, 2020
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 1 जनवरी, 2020

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में पधारने पर

## आर्यसमाज बैंकॉक के प्रधान श्री शिवेन्द्र प्रताप सिंह का स्वागत

दक्षिण एशियायी देश थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक स्थित आर्यसमाज बैंकॉक सम्पूर्ण थाईलैंड की ओर से आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व करता है। दिनांक 28 दिसम्बर, 2019 (शनिवार) को आर्यसमाज बैंकॉक के प्रधान श्री शिवेन्द्र प्रताप सिंह जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में पधारे और सभा अधिकारियों से भेंट की। इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से पीतवस्त्र पहनाकर भव्य सम्मान किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य, वीरेन्द्र सरदाना, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा सहित डॉ. मुकेश आर्य जी, रमेश आर्य जी भी उपस्थित थे।

देश और समाज विभाजन के
षड्यन्त्र का पर्दाफास

### आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

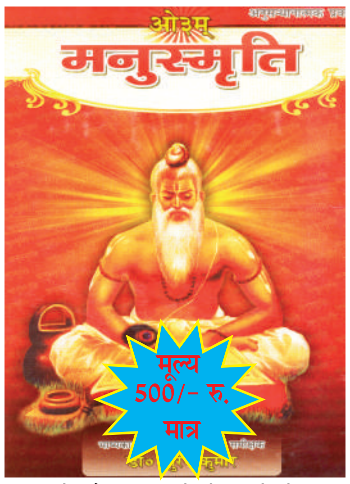


मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

सभा द्वारा उपयोगी मोबाइल एप्प
आज ही डाउनलोड करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह